लंकाकाण्ड - एक आदर्शवाद

लेखक :- डा . सुषमादुराफे

भोपाल

तुलसीदासजी द्वारा लिखित रामचरित मानस जन जन का धार्मिक ग्रन्थ हैं |इसमे सात कांड हैं उनमें से एक हैं**" लंकाकाण्ड"** जिसमें माँ सीता के लिए हुए युद्ध का वर्णन हैं |

जब रावण ने हनुमान के हाहाकार मचाने के पश्चात् राक्षसों की सभा बुलाई थी तब तीन प्रकार के परामर्श के बारे में बताया था | उचित परामर्श , मध्यम परामर्श , निम्न परामर्श | उचित परामर्श जो कठिनाई को भलीभांति परखने के पश्चात् धार्मिक सिद्धांतों के अनुसार दिया जाता हैं | धार्मिक सिद्धांतों की अपेक्षा स्वयं की रूचि अधिक ध्यान में रख कर व तर्क -वितर्क के आधार पर दिया गया परामर्श मध्यम परामर्श की श्रेणी में आता है | निम्न कोटि का परामर्श मित्थ्या प्रशंसा अथवा चापलूसी को ध्यान में रख कर दिया जाता है |

विभीषण का मानना था कि कोई भी राक्षस श्रीराम की शक्ति के सामने यु ध्दभूमि में सामना नहीं कर पायगा| इसलिए सीता राम को सौंप देनी चाहिए |इस सन्दर्भ में विभीषण ने रावणसे कहा था कि वह मंत्री जो अपने राजा एवं उसके शत्रु की शक्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने में निपुण हो और उसके आकलन अनुरूप सला ह देता हैं वही राजा का सच्चा सलाहकार तथा राज्य का सेवक हैं | सभा में विभीषण ने रावणसे सही कहा था कि केवल रुचिकर वचन के साथ मिथ्या प्रशंसा करने वाला व्यक्ति सुलभ हैं किन्तु जो वास्तव में किसी के कल्याण के लिए श्रवणमें अरुचिकर परन्तु सत्य वचन बोलते हैं,विश्व में दुर्लभ हैं |

जब विभीषण ने श्री राम की शरण में आने की बात कही तो राम ने जो कि त्रिकालदर्शी और सर्वज्ञ हैं, हनुमान के दल में आकर सदस्यों से उनके विचार पूछे अर्थात किसी भी समस्या से निपटने के लिए हमें अपने साथियों से पर्याप्त परामर्श करना सर्वथा उचित होगा |

लंकाकाण्ड में एक प्रसंग ऐसा आया जब सभी वानर निर्माण कार्य में लगे हुए थे तभी हनुमान की निगाह उस गिलहरी पर पड़ी जो भगवान की सेवा के प्रयास में धूल कण को उठाकर सागर में फेंक रही थी | इसे देख हनुमान ने उस गिलहरी को मार्ग से हटने को कहा | इसे सुन श्री राम ने हनुमान से बड़े ही माधुर्य भाव के साथ कहा कि तुम पर्वत की चोटी को ले जा रहे हो और वह धूल के छोटे-छोटे कणों को किन्तु दोनों ही समान उद्द्येश्य पूर्ति हेतु अपनी पूरी सामर्थ्य

के साथ सेवा रत हैं | अतएव में तुम दोनों की सेवा को सामान महत्व देता हूँ अर्थात किसी भी संस्था या संगठन के निर्माण में उसका प्रत्येक सदस्य अपने सामर्थ्यानुरूप सेवाभाव रख कर कार्य करेगा तो उसकी प्रगति निश्चित ही होगी |

विभीषण ने अपने भतीजे इन्द्रजीत से कहा था कि धर्म के अनुसार व्यक्ति का कर्तव्य हैं कि पापी के साथ अपने सभी संबंधों का त्याग कर दे ,भले ही पापी व्यक्ति अपने स्वयम के कुल का सगा सम्बन्धी क्यों न हो |किन्तु इन्द्रजीत द्वारा विभीषण की सलाह न मानने के कारण उसे मृत्यु का सामना करना पड़ा | अर्थात अपने से वरिष्ठों की सलाह अनुसार किये जाने वाला कार्य हमेशा हितकर ही रहेगा |

रावण की मृत्यु के पश्चात् श्री राम ने विभीषण से उसके अपने ज्येष्ठ भाई के अंतिम संस्कार करने हेतु कहने पर विभीषण को कुछ असमंजस में पाकर राम ने समझाया कि मृत्यु के साथ उसके प्रति सम्पूर्ण विरोध समाप्त हो चुका अब तुम्हे अपने कर्तव्यों एवं धार्मिक मान्यताओं के परिपालन में दाह संस्कार करना चाहिए | इसी प्रकार रावण की मृत्यु पश्चात् हनुमान ने माँ सीता से उन सभी राक्षसनियों जिन्होंने माँ सीता को सताया था , का वध की अनुमति मांगी तो माँ सीता ने कहा था किकिसी भी व्यक्ति की महानता यही हैं कि उसके प्रति किसी के द्वारा कुचेष्टा एवं अपराध पर दंड-विचार न कर उन बुरे व्यक्तियों के प्रति भी साधुवाद रखता हैं या उनके लिए भी सत्कर्म करने हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ होता हैं |

** वास्तव में रामचरितमानस आदर्शवाद का पर्याय हैं **